डॉ. दिनेश श्रीवास द्वारा रचित

माली

उपन्यास का समीक्षा वृत्त और अन्य कहानियाँ

- 'खोटा सिक्का' कथा संग्रह और
- 'संवेदना' कथा संग्रह के पुण्य स्मरण के साथ



संपादक मण्डल

डॉ. वेदप्रकाश
डॉ. चंद्रशेखर सिंह
सुश्री नमता ध्रुव
डिकेश्वर साहू
मंजीत कुमार चौबे

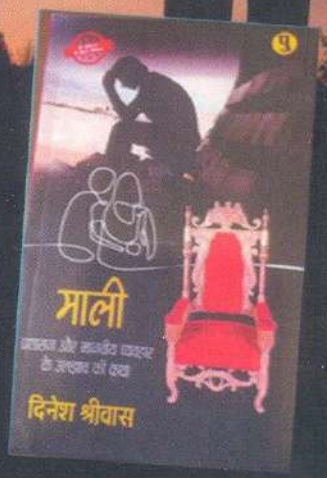

आई एस बी एन : 978-93-6355-690-4

प्रकाशक

एविन्सपब पब्लिशिंग

शिवम् कॉम्प्लेक्स, कोनी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ 495009

वेबसाइट : www.evincepub.com

ई-मेल : publish@evincepub.com

फोन नं. +91-9171810321

इस पुस्तक के सर्वाधिकार लेखक के पास सुरक्षित हैं। लेखक की अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी या रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनरुत्पादित, पुनः उपयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस किताब के संबंध में अनाधिकृत कार्य करने वाले व्यक्ति, संस्था के विरुद्ध अपराधिक अभियोजन के कार्रवाई के साथ नागरिक कानून के तहत क्षतिपूर्ति के लिए मुकदमा दायर किया जाएगा।

कॉपीराइट © डॉ. दिनेश श्रीवास

मूल्य : 250 रुपये

संस्करण : अगस्त 2024

'माली'
उपन्यास का समीक्षा वृत्त और अन्य कहानियाँ

डॉ. रमेश कुमार टण्डन को सादर सप्रेम भेंट.

डॉ. दिनेश श्रीवास
15/10/2024

सम्पादक मण्डल

डॉ. वेदप्रकाश
सहा. आचार्य (हिंदी)
किरोड़ीमल महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. चन्द्रशेखर सिंह
विभागाध्यक्ष हिंदी शा.महाविद्यालय,
घरघोड़ा, छत्तीसगढ़

सुश्री नम्रता ध्रुव
सहा. प्राध्यापक हिंदी
नवीन शासकीय महाविद्यालय अमलीडीह,
रायपुर (छ.ग.)

डिकेश्वर साहू
कवि एवं हिंदी अध्येता कोरबा

मंजीत कुमार चौबे
हिंदी अध्येता, अतिथि प्राध्यापक,
शा. महाविद्यालय,बलरामपुर (छ.ग.)

15. 'माली' उपन्यास में स्त्री विमर्श - डॉ. बी० नंदा जागृत 54

16. 'माली' उपन्यास : स्त्री विमर्श - श्रीमती करुणा गायकवाड़ 56

17. प्रशासनिक व्यवस्था में मानवीय मूल्य के पतन को निर्वस्त्र करती है 'माली'- राजकुमार शाह 59

18. 'माली' उपन्यास : वर्तमान का यथार्थ दस्तावेज - डॉ. गजेन्द्र मोहन 61

19. नर पशु से देव मानव तक 'माली' - डॉ. शिव कुमार शर्मा 65

20. उपन्यास 'माली' मेरी नजर में - डॉ. रमेश कुमार टण्डन 67

21. मन के रंग-रोगन की राह प्रशस्त करता 'माली' - डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी 77

22. सामाजिक मूल्यों की पड़ताल करता उपन्यास 'माली' - श्री जीतनराम पैकरा 79

23. प्रशासन की विसंगतियों पर संवेदनशील चर्चा 'मालीं' - प्रो०जयराम सूर्यवंशी 89

25. आम आदमी के जीवन की जटिलताओं और संघर्ष पर ध्यान केन्द्रित करता है 'माली'- शिव कुमार दुबे 94

25. मानव मूल्य पर केन्द्रित यथार्थवादी उपन्यास 'माली' - डॉ.आलोक शुक्ला 96

26. समाज, प्रशासन व युवाओं का पथ प्रदर्शक है उपन्यास 'माली'- डिकेश्वर साहू 98

27. 'माली' में सामाजिक और राजनैतिक चेतना - डॉ. देवेन्द्र साहू 103

28. डॉ. दिनेश श्रीवास के उपन्यास 'माली' में नारी अस्मिता के स्वर- डॉ. रवीन्द्र चौबे 104

29. 'माली' मेरी नजर में - डॉ. अवधेश चंसौलिया 106

30. 'माली' मेरी नजर में - डॉ. रविकांत सनाड्य 107

31. 'माली': समाज में असमानता, अन्याय और विरोध का आईना - वंदना वाधवानी 108

32. 'माली' उपन्यास आज के सामाजिक, राजनैतिक, युवा वर्ग, चुनावी तंत्र और पत्रकारिता पर करता है करारा कुठाराघात - सुश्री नम्रता ध्रुव 112

33. समाज के बदलते मूल्यों और संवेदनाओं को उजागर करता उपन्यास 'माली'- डॉ. आंचल श्रीवास्तव 114

34. आधुनिक जीवन और 'संवेदना' - डॉ. अमित कुमार सिंह 118

35. डॉ. दिनेश श्रीवास का कहानी संसार - डॉ. एस. एल. गोयल 121

36. डॉ. दिनेश श्रीवास का रचना संसार: 'सवेदना' - डॉ. ऊषीबाला गुप्त 125

37. जीवन का राग सुनाती डॉ. दिनेश श्रीवास की कहानियाँ - सीमारानी प्रधान 129

38. संवेदना वैविध्य और दिनेश श्रीवास की कहानियाँ - डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह 132

39. तात्विक विवेचन के अनुक्रम में 'माली' उपन्यास - डॉ. चन्द्रशेखर सिंह 136

40. रचना के में विषय विद्वानों के विचार 141

41. जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति की पड़ताल करती 'संवेदना' 143

खंड-ख

डॉ. दिनेश श्रीवास द्वारा रचित 'खोटा सिक्का' कथा संग्रह 152

20.

उपन्यास 'माली' मेरी नजर में

-डॉ० रमेश कुमार टण्डन,
विभागाध्यक्ष व शोध निदेशक (हिन्दी), शास० महात्मा गांधी स्नातको०
महाविद्यालय खरसिया, छ.ग

डॉ० दिनेश श्रीवास विरचित उपन्यास 'माली' में वर्तमान व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया गया है। सच्चा अधिकारी परेशान होता है, इसके पीछे पतित और भ्रष्ट अधिकारी, मंत्री, छूटभैया नेता लोगों की गलत कार्यशैली है। प्रोफेसरों, लड़कियों व महिला अधिकारियों की चरित्रहीनता, झूठा आरोप और महाविद्यालय के वर्तमान माहौल को उपन्यास में उकेरा गया है। वर्तमान जीवनशैली पर भी व्यंग्य किया गया है। निष्कर्षतः प्रशासनिक अधिकारियों को माली की तरह रक्षक होना चाहिए, न कि भक्षक; ये निरूपित किया गया है।

मुख्य पात्र-

डिप्टी कलेक्टर जयेश (माली),अन्य मुख्य पात्र तहसीलदार विमला (डिप्टी कलेक्टर जयेश की पत्नी), बॉटनी का प्रोफेसर सोमेन वर्मा, जया (सोमेन वर्मा की पत्नी), मोहन (सोमेन का बड़ा भाई), इंस्पेक्टर सचिन कुमार (अंशु केस में कमल जिस थाने में बंद है), पत्रकार रामभरोसे पाण्डे, पार्षद जयलाल (खलनायक), अंशु (प्रो० सोमेन की छात्रा), कविता (विनय की प्रेमिका), ज्योति (कविता की सहेली व कमल की मित्र), रमणीक (कमल का मित्र)।

अन्य पात्र

मेघना (जोसेफ की बहन), जयेश पर आरोप लगाने वाली मोहिनी विजय (महिला बाल विकास अधिकारी), टेलीफोन ऑपरेटर रामगोपाल, जोसेफ (जयेश का मित्र), मनीषा (जयेश की बहन), तनुजा (मोहन की पुत्री), रंजीता (सोमेन की छात्रा), रमेश (रंजीता का बायफ्रेंड), प्रो० मिस शुभ्रा, डॉ० खन्ना, कलेक्टर विजय प्रकाश, कलेक्टर रत्नेश शाह, रतिराम (कलेक्टर विजय प्रकाश का चपरासी), सरपंच पुनीता (कलेक्टर विजय प्रकाश ने इसका बलात्कार किया), ठेकेदार माखीजा (इसने और मोहिनी विजय ने जयेश को फँसाया था), पार्षद/कैन्टीन के मालिक जयलाल का बेटा कमल (छात्रनेता), नगरसेठ धनचंद का पुत्र देवांग (छात्रनेता) और पुत्री अरूणा (छात्रनेत्री), भूतपूर्व छात्र अध्यक्ष विनय बजाज, परमेश्वर बजाज (विनय के पिता), डॉ० प्रशांत (कविता को गर्भपात से

बचाया), पत्रकार दिगम्बर (नंगी औरतों का पुतला रखने वाला), एसआई शर्मा मैडम, मनोज (सिपाही), वीरू (साइकिल स्टोर वाला), रजनी देवी (नामी वकील), नानू (रजनी देवी का नौकर), श्यामता (रजनी देवी की छोटी बहन), नमन वर्मा (वार्ताप्रिस), रसीद (चायवाला), रोजी (एक आंटी, जहाँ जयेश रूका था), हल्कूराम (मंत्रीजी के गाँव का नौकर), रोहन (जयेश का मित्र), विपिनचंद्र (पंचायत विभाग का डायरेक्टर), आई ए एस शीतल जयराज (विपिनचंद्र की बहन), तिवारी बाबू (विपिनचंद्र का बाबू), पप्पू (विपिनचंद का चपरासी), गोपाल (अंशु का भाई), जस्टिस पूर्णिमा चौरसिया (अंशु का केस जहाँ चला), मैडम पामेला (सीनियर फेमिनिस्ट एक्टिविस्ट), प्रो० जुनेजा (तनुजा की नजर में यह लड़कियों को ताड़ते रहता है)।

माली का अर्थ -

वकील रजनी देवी, तहसीलदार विमला को कहती है, "आप तो एडमिनिस्ट्रेटर हैं। आपके पास तो लाठी है न्याय की। आप रक्षक हैं पहरेदार हैं समाज के, माली हैं बगीचे....।" (75) "माली कौन है ? क्या माली अपने फूल की गंध भी नहीं ले सकता ? नहीं, माली भक्षक नहीं है, रक्षक है, माली कोई भी हो सकता है, प्रशासक, नेतृत्वकर्त्ता या व्यवस्था को चलानेवाला.....कोई भी। माली को बगिया संवारनी है।(पृ.131)

अंक सार

(1) डिप्टी कलेक्टर जयेश पर मोहिनी विजय के द्वारा यौन शोषण का आरोप है। इसकी पत्नी तहसीलदार विमला इसे खोजती है। यह मित्र जोसेफ के घर तीन-चार दिनों के लिए रूकने गया है। यहाँ जोसेफ की बहन मेघना से ये आकर्षित होते हैं।

(2) विमला बहुत दिनों बाद अपने ससुराल गाँव जाती है। उसे बरगद पेड़ की छाया में जयेश के साथ बिताए पल याद आते है। बहन मनीषा के लिए बड़ा भाई जयेश सुपरमैन है, वह वकील है और जयेश के प्रकरण में जीत के लिए जी जान से लगी है।

(3) सोमेन वर्मा, जयेश के मित्र हैं। सोमेन का बड़ा भाई मोहन, मोहन की पत्नी की मृत्यु हो गई है, तनुजा भतीजी है। सोमेन बॉटनी के प्रोफेसर हैं। पत्नी जया से कुछ दिन अच्छा प्यार रहने के बाद सोमेन अपने रिसर्च स्कॉलर रंजीता से आकर्षित होते हैं। परन्तु रंजीता रमेश की गर्लफ्रेंड निकल जाती है। रंजीता प्राचार्य के पास प्रो० सोमेन पर मिसविहेब की शिकायत करती है। प्रो० मिस शुभ्रा रंजीता का साथ देते हुए प्राचार्य को इस बात की चुगती करती है। यहाँ मिस शुभ्रा, प्रिंसीपल की निकट प्रतीत होती है।

(4) द्वितीय शनिवार को अपने पति को जेल जाने से बचाने के लिए पुनीता कलेक्टर के कार्यालय में जाती है। कलेक्टर विजय प्रकाश अपने केबिन पीछे रिलैक्स रूम में उस

फरयादी महिला सरपंच पुनीता से बलात्कार करते हैं। सप्ताह भर मीडिया में ये बात चलती है। मुख्यमंत्री जवाब में कहते हैं- जाँच चल रही है, न्याय मिलेगा।

(5) छात्र संघ चुनाव में कैन्टीन मालिक का पुत्र कमल और भूतपूर्व अध्यक्ष विनय बजाज हार जाते हैं। नगर सेठ का पुत्र देवांग जीत जाता है। एक-दूसरे के दुश्मन कमल और विनय देवांग से हार जाने के बाद मधुशाला में मित्र बन जाते हैं। इस अंक में कविता-विनय प्रेमी युगल थे। महाविद्यालय में छात्रों का रोमांस और सेक्स, चुनाव, गुटबंदी, मारपीट, पत्रकारों की आवाजाही का वर्णन इस अंक में मिलता है।

(6) विनय और उसके पिता का शापिंग माल है। ज्योति माल में जॉब करती है। यहाँ सुन्दरियों के वाग्जाल के माध्यम से व्यापार कराया जाता है। कविता, विनय की तरफ से गर्भवती हो गई है। विनय डॉ० खन्ना से मिलकर गर्भपात कराना चाहता है। परन्तु ज्योति डॉ० प्रशांत से मिलकर दवाई के प्रभाव को निष्फल कर देती है। कविता को विनय पर पूरा विश्वास है। ज्योति के कहने पर प्रो० सोमेन विनय के पिता से इस बारे में बात करते हैं।

7) रमणीक, पत्रकार दिगम्बर के घर जाकर औरतों की नंगी पुतलियों को देखता है। पीने के दौरान वह रमणीक की ऊँगलियों को दबाता है। अविवाहित दिगम्बर आकर्षण और विकर्षण के बीच फंसा हुआ साइको है। कमल उसे जेल भिजवा देता है लेकिन रामभरोसे उसे निकाल लेता है। दूसरी ओर, कविता की लड़की होती है। देर से विनय को अपराधबोध होता है लेकिन कविता मना कर देती है। विनय अपने पिता के अनुसार शादी करने के लिए हाँ कह देता है।

(8) ट्यूशन से वापसी के दौरान अंशु की साइकिल पंक्चर हो जाती है। वीरू की साइकिल स्टोर में सुनसान का फायदा उठाकर कमल और उसके दो साथियों ने अंशु का बलात्कार किया। पत्रकार रामभरोसे ने मुख्यमंत्री के प्रेस कान्फ्रेन्स में आवाज उठाई तो रास्ते में आते वक्त इसका कत्ल कर दिया जाता है।

(9) विमला, जयेश के प्रकरण के बारे में बात करने के लिए वकील रजनी देवी के पास जाती है। रजनी की बहन श्यामता 20-25 महिलाओं को लेकर रैली निकालती है। पुलिसवाले अंशु के बलात्कारियों का लॉक अप में डालती है।

(10) जयलाल, स्टेशन में मंत्री जी का स्वागत करता है। अंशु बलात्कार केस में कमल को बचाने के लिए पिता जयलाल मंत्री को निवेदन करता है। परन्तु मंत्री हाथ खड़े कर देता है, साथ ही रामभरोसे मर्डर केस में जयलाल को सावधान रहने कहता है। जयेश, मेघना के साथ चर्च जाता है, वापसी में एक ग्रामीण शादी में खाना खाते हैं, जयेश को सर्च करने के लिए गई हुई पुलिस और विमला बैरंग वापस होते हैं। इधर थानेदार के समक्ष

मोहिनी विजय अपने बयान में जयेश को निर्दोष बताती है। रेडी टु ईट सप्लायर ठेकेदार मिसेज माखीजा के कहने पर खुद फँसने से बचने के लिए यह जयेश पर झूठा आरोप लगाई थी।

(11) जयेश वापस आ गया है। दोनों खाने के मेज पर बैठे हैं। जयेश का मन खिन्न है। काफी समय बाद जयेश कुछ बात करता है। विमला बार-बार पूछती है, क्या तुम मोहिनी की तरफ आकृष्ट नहीं थे? उधर मोहिनी के ख्याल में जयेश आता है, यह कई बार जयेश को कॉल की परन्तु बात नहीं हो पायी थी।

(12) कमल केस में पिता जयलाल अपने परिचित पंचायत विभाग के संचालक विपिनचंद्र से मिलने जाते हैं, परन्तु ये मिलने से मना कर देते हैं। एंटी करप्शन वाले विपिनचंद्र के पीछे पड़े हैं। पत्रकार दिगम्बर के सवाल से बचने के लिए इनके गले में खरास आ जाती है। इनके चाटूकार असिसटेंट साहब और तिवारी बाबू खरास के लिए नुख्सा भी दिए। विपिनचंद्र की आई ए एस बहन के घर ई डी का छापा पड़ता है लेकिन रिश्तेदारों के नाम पर बंगला रहने पर यह बच जाती है।

(13) वकील रजनी देवी के माध्यम से अंशु बलात्कार के मुख्य गवाह और अन्य ने बयान बदल दिए और कमल की जगह काल्पनिक ट्रक ड्रायवर को मुख्य आरोपी बताया। जया के साथ सोमेन का रिश्ता अच्छा नहीं है। सोमेन काउंसिलिंग के लिए मैडम पामेला के पास जाते हैं, लेकिन परिणाम संतोषप्रद नहीं रहा। सोमेन लैब से आते वक्त पानी में भीग जाता है। उसे ज्वर आता है, इस स्थिति में पक्षी रूप में जया, रंजीता, अंशु को सपने में देखता है, इन्हें बहेलिया रूप में प्रिंसिपल मार गिराता है। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए गोपाल ने अंशु को जयेश के भेज दिया। सोमेन और विमला, अंशु केस से हटने का निवेदन करने के लिए रजनी देवी से मिलते हैं। एन्युअल फंक्शन में सोमेन रंजीता के सामने होते हैं परन्तु सोमेन तो पहले से नाराज हैं। रंजीता मिस शुभ्रा को खरी-खोटी सुनाती है। वह नाराज होकर दोनों की शिकायत प्राचार्य से करती है। सोमेन कालेज जाना बंद कर देता है। जयलाल ने अब दूसरा वकील कर लिया है। वीरू की गवाही एवं अंशु के बयान के आधार पर जस्टिस चौरसिया ने कमल के साथ अंशु की शादी का फैसला सुनाते हुए उसकी संपत्ति पर भी अंशु को अधिकार दिया। कलेक्टर शाह भ्रष्ट निकला। जयेश, इंस्पेक्टर सचिन मामले की जाँच कर रहे हैं।

(14) रमणीक, ज्योति और कविता को जॉब दिलाता है। रमणीक निस्वार्थ भाव से ज्योति के सामने प्रेम प्रस्ताव रखता है, परन्तु वह स्वीकार नहीं करती। बाद में कविता के सामने भी शादी का प्रस्ताव रखता है, लेकिन वह कहती है कि उसकी बच्ची का बाप विनय ही है और दोनों में दोस्ती बनी रहेगी। मोहन की बेटी तनुजा को डॉ० खन्ना से सावधान रहने की भी बात सोमेन और मोहन आपस में करते हैं। डॉ० खन्ना पैसे के लिए कुछ भी कर

सकता है। उसकी पत्नी ने इससे परेशान होकर आत्महत्या कर ली है। सोमेन के बड़े भाई मोहन के घर में प्रो० सोमेन, प्रो० जुनेजा, कलेक्टर जयेश मिलते हैं, वहीं से सोमेन और जया के रिश्ते की मधुरता के लिए जया के घर सभी जाते हैं, विमला भी वहीं मिलती है। इस अंक में जयेश को एक माली के रूप में निरूपित किया गया।

इस उपन्यास में विभिन्न विषयों पर वर्णित लेखक के विचार को निम्न बिन्दुओं पर रेखांकित किया जा सकता है

1. जीवन क्या है ?

रमणीक ज्योति के समक्ष प्रेम प्रस्ताव रखता है, ज्योति स्वीकार नहीं करती। इस पर कविता ज्योति को समझाते हुए कहती है, "मनुष्य सोचता है अभी उसके पास बहुत समय है और नष्ट करता है लेकिन यही व्यतीत हुआ समय जीवन के भावी क्षणों और अवसरों को प्रभावित करते हैं। बचे समय को समंजित करना पड़ता है अथवा अवसर से चुकना पड़ता है।" (पृ.126) विमला जया को समझाती है, "पहले हम संयुक्त परिवार को दोष देते थे, अब इंसान इंसान का साथी न रहा, जानवरों को तवज्जो देता है।" (पृ.129) "आज के आधुनिक शहरी भाग-दौड़ भरे जीवन में पति-पत्नी ही एक-दूसरे के सहयोगी और पूरक होते हैं।" (पृ.22)

2. स्त्री क्या चाहती है ?

विमला, अपने पति को बचाने के लिए वकील रजनी देवी से मिलती है। रजनी, विमला से कहती है, "पब्लिक हो या अफसर, रक्षक या भक्षक सब स्त्री को खुले बगीचे का फल समझ खा जाना चाहते हैं। (पृ. 74) काउंसिलिंग के दौरान मैडम पामेला, सोमेन से कहती है, "स्त्री जो कहती हैं या नहीं कहती हैं उसमें अंतर होता है। पता नहीं आपको ये कैसे लग गया कि वो आपके ईर्द-गिर्द नहीं रहना चाहती। इसके भी आगे, हर स्त्री एक समर्पित पुरुष चाहती है और इसे भी वह कहे यह आवश्यक नहीं, कह भी सकती है।" (पृ.107)

3. प्रेम क्या है ?

"जयेश ने मेघना को देखा और कुछ कहने का प्रयास किया, फिर कुछ निश्चित न कर सका, मेघना ने आश्चर्य और हास्य भाव से जयेश को देखा, फिर मुस्कुराते हुए वापस चली गई। जयेश मेघना को जाते तक देखता रहा। (पृ. 20) "प्रेम के लिए सब कुछ समर्पित करने के बाद भी समर्पित करना शेष रहता है। प्रेम में मान-सम्मान, लाभ-हानि सब बराबर होता है।" (पृ.44) "समर्पण आ जाए तो स्त्री-पुरुष के झगड़े ही समाप्त हो जाए लेकिन आज अहम् ही प्रेम को निगल रहा है।" (पृ.45) कोर्ट के बाहर मोहिनी, जयेश से मिलती है। मोहिनी के दिल में प्यार है। जयेश कहता है, "अपराध का जन्म मन से होता है,

कदाचित् नेत्र इसके माध्यम बनते हैं, उचित अनुचित के द्वन्द्व में अनुचित की विजय इसके मार्ग को प्रशस्त करता है, यद्यपि अनुचित-उचित भी सन्दर्भों पर निर्भर करता है, किन्तु इस अनुचित के दमन के पश्चात् अपराध की सम्भावना शून्य हो जाती है। कदाचित अनुचित का मैं दमन न कर सका। मोहिनी जिसे तुम प्रेम कह रही हो, वह तुम्हारे लिए तो प्रेम है किन्तु मेरे लिए अनुचित। (पृ. 121) "इस जीवन जगत में विशुद्ध प्रेम का ढिंढोरा पीटना गलत है। जीवन जीने के लिए सहयोग, आकर्षण और भावनाओं की भी आवश्यकता होती है।" (पृ.127)

4. शादी के बाद भी आकर्षण/प्रेम/हवस

बॉटनी के प्रोफेसर सोमेन की शादी जया से हो चुकी है, आपसी मनमुटाव के बाद सोमेन कॉलेज में अधिक समय बिताने लगे थे। "रिसर्च और रंजीता में सोमेन इतने खो जाते थे कि उन्हें समय का ध्यान ही नहीं रहता था।" (पृ.32) उपन्यास में प्रो० सोमेन रंजीता से आकृष्ट हुए। जयेश मेघना से आकृष्ट हुए। प्रो० जुनेजा भी आशिक मिजाज हैं। कॉलेज प्रिंसिपल भी प्रो० मिस शुभ्रा के निकट है। मोहिनी विजय, जयेश से आकर्षित है। कलेक्टर विजय प्रकाश, सरपंच पुनीता का बलात्कार करते हैं।

5. नारी अंगों का वर्णन

कलेक्टर के कार्यालय में सरपंच पुनीता अपने पति को बचाने के लिए निवेदन करने गई थी, "फिर बिस्किट को अपने मुँह की ओर ले जाने लगी, बीच में बिस्किट का भींगा हिस्सा गिर गया और महिला के वक्ष पर गिरकर ब्लाउज के अंदर चला गया। उनके स्तन पर गिरा शायद, महिला को जलने का अहसास हुआ, उसने उस स्थान को हाथ से मसल दिया।" (पृ.41) "रूप की बला ज्योति थी ही ऐसी कि एक बार उसे देख लेने के बाद उसकी नीली आँखों को कोई भूल नहीं पाता। उसके स्ट्राबेरी होठों को, उसके गालों पर लटकते बालों को कोई भूल नहीं पाता।" (पृ.47) "विनय ने दोबारा कविता के कमर को दोनों हाथों से पकड़ उसे पलंग पर लेटा दिया और उस पर जा गिरा, उसके वक्षःस्थल को चूमते हुए कहा.....तब तक विनय ने कविता का लोअर उतार लिया था,..... विनय को त्वचा के स्पर्श का अनुभव होने लगा।"(पृ.51) अंशु के संबंध में, " फिर नीचे से पेंट को खींचा तो अंडरवियर दिखने लगा। लड़के ने झट से अंडरवियर के इलास्टिक को कुरेदते हुए तीरछा खींचा, अंडरवियर फट गया।"... "उसके कपड़े फट गए थे। वक्ष स्थल खुला था, कमर के नीचे कुछ भी नहीं था, केवल खून के कतरे फैले हुए थे।" (पृ. 68)

6. सांवली नारियों की सुंदरता का वर्णन

डिप्टी कलेक्टर जयेश सांवले रंग की लड़की मेघना से आकर्षित होते हैं। "बदन भरा हुआ, आँखें बड़ी-बड़ी, गोल चेहरा और वक्ष स्थल उभरा हुआ था, टी-शर्ट पहनने के

कारण उसका फैलाव ज्यादा था। (पृ. 19) अंक 4 में कलेक्टर विजय प्रकाश, सांवली रंग की महिला सरपंच पुनीता से आकर्षित हुए थे। "सांवला-सा रंग आकर्षण लिए था। उसके दाएँ गाल पर एक केश का गुच्छ झूल रहा था, लगता था जैसे जानबूझकर केशगुच्छ को स्वतंत्र कर दिया गया हो। बालों को एक विशेष बनाव-श्रृंगार से सजाया गया था।" (पृ.40)

7. नारी और अति आधुनिकता

"जयेश जब शादी के लिए विमला को देखने आया था, उसने विमला से कुछ भी नहीं पूछा था बल्कि विमला ने जयेश को छेड़ते हुए प्रश्न किया आपने पी.एस.सी. में टॉप कैसे किया? कुछ मैनेज किया था क्या? (पृ. 23) "ये तितलियाँ आज अनेक रूपों में हैं। ये बायफ्रेंड जैसा हमदर्द और साथी ढूँढकर उसका भरपूर उपयोग करती हैं। बात इससे बढ़ जाती है तो ये उनसे शादी भी रचा लेती है।" (पृ.46)

8. पुरूष क्या है ?

मोहिनी विजय थानेदार से कहती है, "मर्द भँवरें की तरह इस फूल से उस फूल मचलता है, नैतिकता धरी की धरी रह जाती है, समाज मन ही मन इसे रंजन का विषय मानता है, भले ही समाज को नियंत्रित करने के लिए नैतिकता के कई ग्रंथ लिखे गए हैं।" (पृ.90) जयेश की वापसी के बाद विमला जयेश से कहती है कि एडिशनल मैडम ने एक दिन विमला को कहा था, "औरत और आदमी में कुछ अंतर होता है। तुम्हें लगता है कि तुम जिस आदमी को जानते हो, वह वही है, लेकिन वह पूरी तरह वही नहीं होता। कभी-कभी सही भी नहीं होता।" (पृ.94) मोहन, सोमेन से कहता है, "मेरी दृष्टि में नारी सौंदर्य से पूर्णता को पाने एवं जीवन-जगत को अभिभूत करने की शक्ति का नाम पुरुष है।" (पृ.131)

9. भ्रष्टाचार

"जयेश जब शादी के लिए विमला को देखने आया था, उसने विमला से कुछ भी नहीं पूछा था बल्कि विमला ने जयेश को छेड़ते हुए प्रश्न किया आपने पी.एस.सी. में टॉप कैसे किया? कुछ मैनेज किया था क्या?(पृ.23) महिला सरपंच पुनीता कलेक्टर से कहती है, "जी सर, बात हुई थी। मैं कुछ खर्च करने के लिए भी तैयार हूँ। किसी तरह इस केस से मुक्ति मिल जाये और फिर स्व-सहायता समूह का केस भी निपटाना है, उसमें भी गड़बड़ी की है मेरे पति ने।" (पृ.40) "इंसाफ के लिए कानून की देवी भेंट माँगती है।"(पृ.71) एस पी ने इंस्पेक्टर सचिन कुमार से कहा, "इस केस से तुम्हारा कद बढ़ जाएगा..... कुमार ने कहा, कद तो दूसरे चीजों से हूँ। किसी तरह इस केस से मुक्ति मिल जाये और फिर स्व-सहायता समूह का केस भी निपटाना है, उसमें भी गड़बड़ी की है मेरे पति ने।" (40) "इंसाफ के लिए कानून की देवी भेंट माँगती है।"71) एस पी ने इंस्पेक्टर सचिन कुमार से

कहा, "इस केस से तुम्हारा कद बढ़ जाएगा..... कुमार ने कहा, कद तो दूसरे चीजों से बढ़ता है सर !" (पृ. 88)

10. अभाव की महत्ता

"जगत में अभाव ही मूल्यवृद्धि का कारक होता है फिर वो चाहे कोई वस्तु हो अथवा मनुष्य।", "प्रिय के न होने से प्रिय से जुड़ी चीजें और भी आकर्षक होने लगती हैं"(पृ.24)

11. व्यंग्य / हास्य-व्यंग्य का पुट

पत्नी जया, सोमेन से कहती है, "कॉलेज के काम में व्यस्त हैं या फूलों के गंध लेने में प्रोफेसर साहब।" (पृ.33) "डरिये नहीं, सभी को नहीं काटता, आपने उसे कुत्ता कहा इसलिए घूर रहा है।"(पृ.72) "सरकार केवल नारे लगवाना चाहती है शराब बंदी के और बेचती खुद है।" (पृ.76) "जब सुंदर फिल्मी नायिकाएँ अपने पिता के उम्र के बुढ़े-तलाकशुदा उद्योगपतियों से शादी कर लेती हैं। नेता-अफसर बच्चों को विदेशों में पढ़ा सकते हैं और एडमिनिस्ट्रेशन मैनटेन कर उसका आर्थिक लाभ ले सकते हैं। मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल बनाने वाले डॉक्टर बिना आवश्यकता के सर्जरी कर पैसे कमा सकते हैं तो मंत्री जी भी इसी दुनिया के थे उन्हें भी कुर्सी से हटने के बाद अपना स्टेटस सिम्बल मैनटेन करना था।" (पृ. 79)

12. आमचुनाव पर लेखक की राय

"जैसे आमचुनावों में नेतागण खाने-पीने की वस्तुओं से लेकर मुर्गा-बकरा और पैसे बाँटते हैं। खुद को समानतावादी और गरीबों का हमदर्द बताने के लिए झोपड़ियों में रात बिताते हैं।" (पृ.43)

13. साहित्यकारों का सन्दर्भ

प्रेमचंद ने अपने गोदान में जिसे तितली कहा है वह शहरी थी लेकिन यह (ज्योति) गाँव से आई थी। (पृ.46) अज्ञेय जी ने कहा है, दुख सबको माँजता है, हाँ और माँजने से पहले भिगोता भी है आँसुओं से। (पृ.48) हरिवंशराय बच्चन साहब ने अपने मधुशाला में जिस उन्माद की समानता का दर्शन रखा था वो यहीं (मधुशाला में) फलीभूत हो रहा था। (पृ.49)

14. काव्य पंक्तियों का प्रयोग -

"निर्लिप्त ! निर्लिप्त !..... निर्लिप्त !... आस्वाद कर सुमन रस, मैं हूँ निर्लिप्त भ्रमर।" एवं "फूलों की हिफाजत कर, कलियों में तू ममता भर, बगिया को तू रौशन कर, तू सोच नहीं खाली, माली माली

15. हास्यपूर्ण संवाद

तहसीलदार विमला ने थाना फोन लगाया, सिपाही मनोज ने फोन उठाया।

"हलो जी... हाँ... बोलिए।"
"...कहाँ से बोल रहे हो ?"
"जी मुँह से बोल रहा हूँ, आप कहाँ से बोल रहे हो बोलिये ?"
"कहाँ से बोलते हैं, तुम कौन बोल रहे हो ?"

16. अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग

इस उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों जैसे स्टार्ट, हाईवे, मैडम, कलेक्टर, स्ट्राबेरी, बाथरूम, चेक आउट, रिसीव, एन्ट्री, फोटो, ओवरस्मार्ट, पी.एस.सी., डिप्टी, ज्वाइन, टाप, मैनेज, एडजेस्ट, सर्वेंडर, सपोर्ट, प्रपोज, रिसर्च, फीस, क्लीयर, कलेक्ट, प्रॉपर्टीज, केटेगराइज, सीजन, अकार्डिंग, नो थैंक्स, सॉरी, पर्सनल, मैटर, अग्रेसिव, नाउ, इट्स, क्लोज, यू, मे, गो, डिस्टर्व, शेयर, विथ, मी, मिसविहेब, माय, ओपिनियन, आई, विल, गिव, लीव, एंड, कन्ट्रोल, मस्ट, टेक, रेस्ट, एक्स्ट्रा, डोज, यंग, सर्जन, आफ, द, सिटी, इलिट्रेट, पीपल, नाइस, मेमोरी, बेड, एक्टिविटी, मैसेज, क्रेडिट, एडमिनिस्ट्रेशन, मैनटेन, मल्टीस्पेशलिटी, डॉक्टर, सर्जरी, स्टेटस, सिम्बल, एसक्यूजमी, मैनरलैस, राइट, एकार्डिंग, टू, हर, लाइफ, स्आइल, फेमिली, वेलकम, देम, वी, वीमेन्स, स्ट्रक्चर, सिविलाइज्ड, विल, डिस्ट्राय, ब्लडी, सिस्टम, फार्मेलिटी, इग्नोर आदि का स्थिति एवं पात्र अनुसार प्रयोग बहुतायत से हुआ है।

17. पारिभाषिक एवं नए शब्दों का प्रयोग

उपन्यास में लीबिडो, कैफेटेरिया, चाउ, गे, भर्करा आदि का प्रयोग पाया गया है।

18. व्याकरण की अनदेखी

पृष्ठ 13 पर 'के दीवारों, 'दाएँ तरफ', 'के कुर्सी'; पृष्ठ 15 पर 'हाईवे के एक दुकान', 'उसके गाड़ी'; पृष्ठ 17 पर 'उसके गाड़ी'; पृष्ठ 18 पर 'अपने छाया', 'की जल'; पृष्ठ 23 पर 'के फोटो', 'इनके इस बात'; पृष्ठ 25 पर 'के मेहनत'; पृष्ठ 28 पर 'अपने शारीरिक स्थितियों; पृष्ठ 29 पर 'एक-दूसरे के कमर; पृष्ठ 30 पर 'के परम्परा'; पृष्ठ 31 पर 'अपने चाची', 'के बहसों, अपने माँ, 'के स्थिति'; पृष्ठ 32 पर 'जगह था', 'के कविताओं', 'उसने सुनी नहीं'; पृष्ठ 34 पर 'फिर यही क्रिया रंजीता के द्वारा दोहराया गया; पृष्ठ 35 पर 'उनकी टेबल'; पृष्ठ 40 पर 'उसके तरफ', एक केश का गुच्छ'; पृष्ठ 41 पर 'के तरफ'; पृष्ठ 43 पर 'वोटरों के सेवा' पृष्ठ 46 पर 'के मदद' पृष्ठ 47 पर 'के गतिविधियों; पृष्ठ 49 पर 'अपने मधुशाला'; पृष्ठ 51 पर 'के कमर', 'के आँखों; पृष्ठ 52 पर 'के जीत'; पृष्ठ 53 पर ..... की चकाचौंध... देता

था; पृष्ठ 57 पर 'के प्रेग्नेंसी'; पृष्ठ 66 'दूसरे तरफ', 'अपने साइकिल', 'मैं दूकान बंद कर रहा हूँ; पृष्ठ 77 पर 'के तरफ'; पृष्ठ 78 पर 'के सीमा'; पृष्ठ 79 पर 'के उम्र'; पृष्ठ 88 पर 'दूसरे चीजों'; पृष्ठ 89 पर 'के आत्मप्रवंचना'; पृष्ठ 90 पर 'के मनोस्थितियों; पृष्ठ 91 पर 'मेरे कलम'; पृष्ठ 106 पर 'के व्यवस्थाओं, 'चाय दिया गया'; पृष्ठ 110 पर 'के शिलाओं', 'के सुरक्षा'; पृष्ठ 112 पर 'अपने बातों से; पृष्ठ 113 पर 'के आँख में', 'के गिरफ्तारी'; पृष्ठ 115 पर 'के बड़े-बड़े आँखों; पृष्ठ 121 पर 'की विजय..... प्रशस्त करता है; पृष्ठ 121 पर 'के अर्जी; पृष्ठ 122 पर 'अपने जगह' पृष्ठ 123 पर 'के कार्यशैली', 'के गाड़ी'; पृष्ठ 124 पर 'तुम्हारे भावनाओं; पृष्ठ 125 पर 'तुम्हारे नजरों'; पृष्ठ 128 पर 'तीसरे प्रवृत्ति तथा पृष्ठ 130 पर 'जगह था' वाक्यांशों पर व्याकरण की अनदेखी की गई है, जो आलोचना का विषय नहीं है और **लेखक के महान उद्देश्य के पीछे ये अल्प त्रुटियाँ नजर अंदाज करने योग्य हैं। अंततः लेखक 'माली' उपन्यास के माध्यम से वर्तमान परिस्थितियों पर सचेत करते हुए हमसे माली (भक्षक नहीं रक्षक) बनने की उम्मीद जरूर करते हैं, यही सार एवं सच्चाई है।**

संदर्भ

'माली' उपन्यास, लेखक डॉ० दिनेश श्रीवास, प्रकाशक पुस्तकनामा, गाजियाबाद उ.प्र., संस्करण : 2023, आईएसबीएन 978-93-92581-68-7.